**International Journal of Hindi Research**
**ISSN: 2455-2232**
**Impact Factor: RJIF 5.22**
**www.hindijournal.com**
**Volume 4; Issue 3; May 2018; Page No. 40-41**

# आपदा प्रबंधन में रेडियो की भूमिका

**डॉ0 कविता राज**
Guest Faculty, Public Administration, A.N. College, Patna, Bihar, India

## प्रस्तावना

भारत में ऑल इंडिया रेडियो की स्थापना के समय नियंत्रक रह चुके लॉयनेल फील्डेन ने कहा था कि 'निश्चय ही भारत जैसे देश में प्रसारण जितनी शिक्षा ला सकता है, एकता ला सकता है तथा जितना निर्देश दे सकता है उतना कोई अन्य माध्यम नहीं कर सकता ।' उनकी बात आज भी अक्षरशः सत्य ही है। यही वजह है कि रेडियो की उपयोगिता आज भी है और आपदा प्रबंधन के प्रत्येक स्तर पर इसका उपयोग किया जाना कारगर प्रतीत हो सकता है।

रेडियो के माध्यम से न केवल जानकारी दी जा सकती है बल्कि जागरूक और शिक्षित किया जा सकता है । यद्यपि आपदा प्रबंधन मे रेडियो की भूमिका सभी प्रकार के आपदाओं के प्रति जागरूक व शिक्षित करने में है लेकिन बाढ़ प्रभावित क्षेत्रो में इसका महत्व और भी बढ़ जाता है बाढ, चक्रवात या किसी भी आपदा के वक्त जब लोगों से संपर्क टूट जाता है तब रेडियो तरंगे बहुत आसानी से पहुंच जाती है। रेडियो द्वारा संपर्क साधना बहुत ही सहज व सुलभ है । इसका उदाहरण हमें सत्तर के दशक में आयी फिल्म द बर्निंग ट्रेन में देखने को मिला था। आग लगी ट्रेन में यात्रियों को ऑफिसर ने आल इंडिया रेडियो के माध्यम से निर्देश दिया था । तकनीकी विकास के बाद भी आपदा की परिस्थिति में संपर्क के सभी साधन यथा मोबाइल, लैंडलाइन, बिजली इत्यादि ठप हो जाते है तब बैटरी से चलने वाली रेडियो तरंगे दूर–सुदूर क्षेत्र में संपर्क साधने का जरिया बन जाता है।

संचार के इस माध्यम से दो या अधिक समूहों/व्यक्तियों के मध्य सूचना विनिमय की जाती है। यह शिक्षा और आपात संचार प्रबंधन दोनों के क्षेत्र में प्रासंगिक है। आपदा, शिक्षा और तैयारी के संदर्भ में समुदाय तक आपदा ज़ोखिम, तैयारी तथा न्यूनीकरण के उपाय के ज्ञान को समुदाय तक प्रेषित करती है।

रेडियो माध्यम की विशेषता को समझे जाने की आवश्यकता है–

1. यह लाखों लोगों तक बहुत कम समय में पहुंच सकता है।
2. श्रव्य संचार माध्यम होने के कारण निरक्षरता बाधा नहीं होती है।
3. लागत की दृष्टि से बहुत ही कम खर्चीला है और उपयोग के लिए काफी सुविधाजनक होता है ।

अतः इसी के मद्देनज़र रेडियो माध्यम का अधिक से अधिक उपयोग आपदा प्रबंधन में लाया जाना प्रासंगिक प्रतीत होता है ।

## उद्देश्य

आपदा प्रबंधन पर राष्ट्रीय नीति के मुख्य उद्देश्यों में एक हैः ज्ञान, नवीनता और शिक्षा द्वारा सभी स्तरों पर यथास्थिति आपदा की रोकथाम, तैयारी और न्यूनीकरण की संस्कृति को बढ़ावा देना और आपदा प्रबंधन के लिए मीडिया के साथ और सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करना।एक महत्वपूर्ण संचार साधन के रूप में रेडियो कार्यक्रमों के माध्यम से हम कई उद्देश्यों की पूर्ति कर सकते है–

1. सभी स्तर के पदाधिकारिओं एवं नगरनिगम, नगरपालिका सदस्यों आदि को आपदा से बचाव, तैयारी, न्यूनीकरण, रिस्पांस, रिकवरी के बारे में नई–नई जानकारी देना तथा उनके अनुभवों को साझा करना।
2. समुदाय क लोगों को जागरूक तथा शिक्षित करना।
3. आपदा प्रबंधन के विभिन्न अभिकरणों की भूमिका से अवगत कराना ।
4. फोन – इन –लाइव कार्यक्रमों के माध्यम से लोगो से सीधे सम्पर्क कर समस्याओं को समझना तथा उपाय बताना ।
5. आपदा की स्थितियो में लोगों से संपर्क कर उनका मनोबल बढाना ।
6. प्रभावित क्षेत्रों के उपलब्ध संसाधनों की जानकारी देना ।

## आपदा प्रबंधन में रेडियो प्रसारण हेतु प्लेटफार्म

1. **आकाशवाणी :** यह 'बहुजन हिताय– बहुजन सुखाय ' की नीति पर अपने उद्देश्यों की पूर्ति करता है। इसकी विशेषता है कि एक ही स्टेशन से यह कई जिलों तक अपने कार्यक्रमों को पहुंचाने में सक्षम है। इसके श्रोताओं की संख्या काफी बड़ी है ।
2. **कॉम्यूनिटी रेडियो :** रेडियो हमें कई दशकों से सूचना और मनोरंजन प्रदान कर रहा है, किन्तु कॉम्युनिटी/सामुदायिक रेडियो ऐसा विकास है जिसने पिछले दशक में महत्व ग्रहण किया है। सामुदायिक रेडियो तीन सिद्धान्तों के आधार पर विशिष्ट हैः बिना किसी लाभ के कार्य करना, सामुदायिक स्वामित्व प्रबंधन, तथा सामुदायिक सहभागिता। इसके मुख्य लक्षण सीमित स्थानीय पहुँच, कम बिजली से प्रसारण तथा इस तरह के कार्यक्रम होते हैं जो विशेष समुदाय की शैक्षिक, विकासात्मक तथा सांस्कृतिक ज़रूरतों पर आधारित होते हैं।
3. **हैम रेडियो :** व्यक्तियों से सीधे दोनों तरफ के सम्पर्क के एक महत्वपूर्ण संचार साधन के रूप में हैम रेडियो उभर कर आया है। आपदा के समय, साधारण सम्पर्क व्यवस्था काम नहीं करती हैं या क्षतिग्रस्त हो जाती हैं या बिल्कुल ही बंद हो जाती हैं जबकि इसी समय बचाव कार्य के लिए सम्पर्क व्यवस्था का दुरुस्त होना आवश्यक होता है। इस समय आपात सम्पर्क व्यवस्था के रूप में हैम रेडियो का प्रयोग किया जा सकता है, क्योंकि इसके ट्रांसमीटर और रिसीवर कार की बैटरी से परिचालित हो सकते हैं।
4. **ज्ञानवाणी :** यह इंदिरा गाँधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी का शैक्षणिक एफ0 एम0 रेडियो है । इसके जरिये शैक्षणिक पाठयक्रम का प्रसारण किया जाता है । चुकि आपदा प्रभावित क्षेत्रों में बच्चो की शिक्षा का रेशियो घट जाता है, ड्राप आउट

की समस्या भी देखी जाती है । ज्ञानवाणी के माध्यम से ऐसे प्रभावित क्षेत्रो में शिक्षा में बिना बाधा पहुँचाये निरन्तरता रखी जा सकती है । इस दिशा में शिक्षा विभाग तथा सरकारी प्रयासों की प्रबलता की जरूरत है ।

## मुख्य हितधारक

1. एन0 डी0 एम0 ए0
2. एस0 डी0 एम0 ए0
3. ऑल इंडिया रेडियो
4. इग्नू
5. नेशनल ओपन स्कूल
6. स्टेट ओपन स्कूल
7. स्टेट ओपन यूनिवर्सिटी
8. राज्य सरकार
9. यूनिसेफ

## योजना

आमतौर पर योजना का तात्पर्य दीर्घकालीन तथा लघु कालीन योजना से होता है । यहाँ भी हम इसी आधार पर कदम बढा सकते है।

1. सर्वप्रथम आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से अधिक–से –अधिक सूचनाओं का प्रसारण किया जाये जिसके लिए ऑल इंडिया रेडियो की निर्धारित दरें है ।
2. इग्नू regional सेण्टर से संपर्क कर ज्ञानवाणी से प्रसारण का अनुबंध प्राप्त करना ।
3. राज्य सरकार के कृषि के क्षेत्र में चलाये जा रहे कम्युनिटी रेडियो का आपदा प्रबंधन के सन्दर्भ मे उपयोग में लाया जाना।

## निष्कर्ष

स्वामी विवेकानन्द ने सदियों पहले कहा था, 'हमने सबसे बड़ा राष्ट्रीय पाप यह किया है कि अधिकांष जनता को शिक्षा से वंचित रखा है।' शायद यही वजह है कि विश्व का सबसे बड़ा संविधान होने के बावजुद हमारे देश में कई आधारभूत समस्याएं यथावत रही। कई कानूनों के रहते परम्पराओं का अनुसरण किया जा रहा है, नई व्यवस्थाओं के बावजूद माननीय मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है।

निष्कर्षतः इन सभी का जवाब शिक्षा व जागरूकता की ओर केन्द्रित हो सकता है। जिसमें रेडियो की भूमिका प्रासंगिक है। रेडियो एक लचीला संचार माध्यम है जिसकी महत्ता को आपदा प्रबंधन में सरकारी प्रयासों के स्तर से स्वीकार किया जाना चाहिए।

## सन्दर्भ सूचि


1. जनसंचार, संपादक–राधेश्याम शर्मा, पृष्ठ–335, 336, 337, 211, 239
2. सिद्धेश्वर, समकालीन यथार्थ–बोध
3. चौधरी, डॉ0 विमला, प्राचीन भारत में गुप्तचर व्यवस्था, पृष्ठ–2, 23
4. भटनागर, राम रतन, जैम तपेम ंदक ळतवूजी वि भ्पदकप श्रवनतदंसपेउए पृष्ठ–7
5. वैदिक, डॉ0 वेद प्रताप, हिन्दी पत्रकारिता के 150 वर्ष, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, 27 मई 1976, पृष्ठ–9 (स्त्रोत पुस्तक)
6. सिन्हा, डॉ0 किशोर, हिन्दी की आंचलिक कहानी, परम्परा और प्रयोग
7. योजना, अगस्त, 2007
8. पत्रकारिता का इतिहास और जनसंचार माध्यम
9. चटर्जी, रामकृष्ण, जनसंचार
10. संपादक, राधेश्याम शर्मा; जनसंचार
11. आलोक शर्मा; डॉ०वाकुरदत; हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार
12. माथूर, मीरा, प्रेस, प्रजातंत्र और प्रशासन
13. प्रकाश, इंदु, 1994, 'डिजास्टर मैनेजमेंट (Disaster Management), राष्ट्र प्रहरी प्रकाशन, गाजियाबाद (यू०पी०)
14. सिंह, सविन्द्र, 2016, आपदा प्रबंधन, प्रवालिका पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद।
15. CDM –02 ईकाई–04, आपदा प्रबंधन : विधियाँ और तकनीक, इग्नु, मैदानगढ़ी, नई दिल्ली।
16. मिश्र, गिरीश के०, और जि० सी 0 माथुर (संपादन),१९९३,नेचुरल डिजास्टर रिडक्शन,रिलायंस पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।